Dr. Rajiv Kumar

History department

H.D jain college, ara

Ug semester 1

भारतीय शिक्षण प्रणाली का प्राचीन से आधुनिक काल तक का संक्षिप्त विवरण दें!

भारतीय शिक्षण प्रणाली का विकास प्राचीन से आधुनिक काल तक एक सतत सांस्कृतिक, दार्शनिक और सामाजिक परिवर्तन की यात्रा रही है। इसका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से दिया जा सकता है –

१. प्राचीन काल (लगभग 1500 ई.पू. - 1200 ई.)

मुख्य विशेषताएँ:

- शिक्षा का उद्देश्य था – *व्यक्तित्व, चरित्र और आध्यात्मिक ज्ञान का विकास।*
- **गुरुकुल प्रणाली** प्रमुख थी, जहाँ विद्यार्थी गुरु के आश्रम में रहकर *सादगी, अनुशासन और सेवा* के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते थे।
- वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, गणित, खगोल, संगीत, नृत्य, और शिल्पकला प्रमुख विषय थे।
- नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय *विश्वस्तरीय शिक्षा केंद्र* थे।
- शिक्षा *मुफ्त* और *सर्वजनहितकारी* थी, परंतु ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ग को प्राथमिकता मिलती थी।

२. बौद्ध एवं उत्तरवैदिक काल (600 ई.पू. - 1200 ई.)

मुख्य विशेषताएँ:

- बौद्ध मठों और विहारों में शिक्षा का विस्तार हुआ।
- *तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी* आदि विश्वविद्यालयों में विदेशी छात्र भी अध्ययन करते थे।
- अध्ययन में *तर्कशास्त्र, चिकित्सा, भाषा, दर्शन, अर्थशास्त्र* आदि विषयों का समावेश था।
- शिक्षा का उद्देश्य नैतिकता, अहिंसा और करुणा पर आधारित जीवन का निर्माण था।

३. मध्यकाल (1200 ई. - 1757 ई.)

मुख्य विशेषताएँ:

- मुस्लिम शासनकाल में शिक्षा प्रणाली का स्वरूप बदल गया।
- **मकतब** और **मदरसे** शिक्षा के प्रमुख केंद्र बने।
- शिक्षा का माध्यम *अरबी और फारसी* रहा।
- धर्मशास्त्र, इतिहास, कविता, गणित, ज्योतिष और दर्शन पढ़ाए जाते थे।
- हिन्दू समाज में *पाठशालाएँ और तोल* (छोटी शिक्षण संस्थाएँ) चलती रहीं, जहाँ संस्कृत शिक्षा दी जाती थी।

४. औपनिवेशिक काल (1757 - 1947)

मुख्य विशेषताएँ:

- अंग्रेजों ने भारत में *पश्चिमी शिक्षा प्रणाली* लागू की।
- *मैकॉले की शिक्षा नीति (1835)* के तहत अंग्रेज़ी को शिक्षा का माध्यम बनाया गया।
- उद्देश्य था "क्लर्क वर्ग" तैयार करना – जो ब्रिटिश प्रशासन में सहयोगी हो।
- शिक्षा का केंद्र *नैतिकता या संस्कृति* न रहकर *रोज़गार और प्रशासनिक कार्य* बन गया।
- साथ ही, आधुनिक चेतना, राष्ट्रीयता और सुधार आंदोलनों का उदय भी इसी शिक्षा से हुआ। (उदा० - राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, गांधीजी)

५. स्वतंत्रोत्तर एवं आधुनिक काल (1947 से वर्तमान)

मुख्य विशेषताएँ:

- संविधान ने *शिक्षा को मौलिक अधिकार* का दर्जा दिया।
- 1968, 1986, 1992, और 2020 की **राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ (NEP)** शिक्षा में सुधार के मील के पत्थर हैं।
- शिक्षा का उद्देश्य – *समानता, सर्वांगीण विकास, रोजगार और राष्ट्रनिर्माण*।
- अब शिक्षा *प्राथमिक से उच्चतकनीकी स्तर* तक फैली है।
- *नई शिक्षा नीति 2020* ने बहुविषयक (Multidisciplinary), मातृभाषा-आधारित और कौशल-केंद्रित शिक्षा पर बल दिया है।

निष्कर्ष:

भारतीय शिक्षण प्रणाली ने *गुरुकुल से ग्लोबल यूनिवर्सिटी* तक का अद्भुत सफर तय किया है। इसकी मूल आत्मा आज भी वही है – **"विद्या या ज्ञान केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि जीवन के उत्थान का माध्यम है।"**